उपसंहार

प्रेमचंद और बाल्जाक दोनों दो भाषाओं, दो समाजों और दो अनुभवों के लेखक हैं। 'गोदान' और 'किसान' उपन्यास अलग-अलग समय में लिखे गए हैं और इनमें चित्रित समाज की रूपरेखा भी अलग है, क्योंकि समाज परिवर्तनशील होता है अतः अलग-अलग समय में समाज की रूपरेखा भी अलग-अलग होगी। इसके साथ इसकी संभावना तब और भी अधिक हो जाती है जब समय के साथ-साथ सत्ता में भी परिवर्तन हो चुका होता है, परन्तु प्रेमचंद और बाल्जाक दोनों ही लेखकों ने अपने-अपने उपन्यासों में पात्रों के माध्यम से किसान जीवन में मूल्यों के ह्रास एवं उनकी संघर्षमयी अवस्था को रेखांकित किया है।

साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में किसान जीवन को रेखांकित किया जाता रहा है। समकालीन साहित्य में उपन्यास विधा में भी किसानों के जीवन संघर्ष को महत्वपूर्ण स्थान मिला है। इन उपन्यासों में प्रायःकिसान की समस्याओं तथा संघर्षों को ही विषयवस्तु गिनाया जाता रहा है। वर्तमान दौर में भी किसान समस्या का प्रश्न कथा साहित्य का ज्वलंत प्रश्न है। प्रेमचंद और बाल्ज़ाक के समय का किसान अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संघर्ष कर रहा था। उनकी स्थिति इतनी दयनीय थी कि संपन्न वर्ग उनका हर तरह से शोषण करना चाहता था।

प्रेमचन्द देश की विशाल जनता, खेतिहर देश के श्रमिक और किसानों की महागाथा लिखने वाले भारतीय साहित्यकार रहे हैं। प्रेमचन्द हमें आज और अधिक प्रासंगिक किसान जीवन के संदर्भ में भी लगते हैं। प्रेमचन्द का जितना विरोध आज हो रहा है उससे अधिक अपने जीवन काल में भी हुआ था। सही अर्थों में देखा जाए तो किसान जीवन के चितेरे होने के कारण आज भी हमें उतने ही नवीन लगते हैं, जितने कल थे। प्रेमचन्द कृत 'गोदान' के कथा साहित्य में मध्यवर्ग भी है, लेकिन केन्द्रीय स्थिति किसान-जनता की ही है। यहाँ किसानों का जीवन संघर्ष ही केन्द्रीय विषय है। किसान जिस शोषण के शिकार थे, उस शोषण के पेचीदा तंत्र, उसकी जटिल प्रक्रिया और उसकी भयानक परिणति

का चित्रण प्रेमचन्द ने किया है। इनके कथा साहित्य के लगभग सभी नायक किसान ही रहे हैं। किसान जीवन के विभिन्न रूप, जीवन संघर्ष और मुक्ति संघर्ष में लगे किसान के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं। इनके यहाँ किसान जीवन समग्रता में चित्रित होता है।

कथा साहित्य में किसान को केन्द्र में रखकर बाल्जाक ने वास्तविकता और आकांक्षाओं का कलात्मक चित्रण कर उपन्यास की विशिष्ट यथार्थवादी परम्परा का निर्माण किया है। उनका किसानों से प्रेम और सहानुभूति साफ दिखाई देती है, जब किसान संघर्ष करते हुए हारने के बावजूद जीतते हैं और सामंतवाद हारता है। उनकी रचना 'किसान' को किसान जीवन का 'ट्रैजिक महाकाव्य' कह सकते हैं। किसानों को राज्य, चर्च तथा अन्य जमीदारों को अनेक प्रकार के कर देने पड़ते थे और सामंती अत्याचारी को सहना पड़ता था। एक दृष्टि से किसानों के असंतोष का मुख्य कारण सामंतों द्वारा दिए जा रहे कष्ट एवं असुविधाएँ थी।

दोनों लेखकों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से उपन्यासों की कथा ही नहीं बताई है, बल्कि एक ऐसे यथार्थ का चित्रण किया है जो वर्तमान युग का सच भी है। प्रेमचन्द और बाल्ज़ाक आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने अपने दौर में रहे हैं, बल्कि किसान जीवन की उनकी पकड़ और समझ को देखते हुए उनकी प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। किसान की दृष्टि से अगर इन दोनों रचनाकारों के कथा साहित्य को यदि पुनः देखा जाए तो कई अर्थों में ये लोग गाँधी से भी आगे की सोच रखते हुए दिखाई देते हैं। किसान जीवन के यथार्थवादी चित्रण में प्रेमचन्द और बाल्ज़ाक साहित्य में अनूठे और लाजवाब रचनाकार रहे हैं।

आज पूर्व से लेकर वर्तमान समय तक किसानों की स्थिति में ज्यादा परिवर्तन नहीं दिखता। प्रेमचंद और बाल्ज़ाक ने अपने समय के किसानों की जिन स्थितियों को रेखांकित किया था कहीं न कहीं वही स्थितियाँ आज भी मौजूद हैं। भारत हो या फ्रांस किसान आज भी समस्याओं से ग्रस्त हैं,

लगातार उनके आत्महत्या करने की सूचनाएँ हमें प्रतिदिन प्राप्त होती हैं। दोनों ही जगहों पर किसानों की संख्या सर्वाधिक थी और इनकी दशा निम्न और सोचनीय थी।

आज एक लम्बी अवधि व्यतीत होने के बाद भी किसानों की दशा में सिर्फ नाममात्र का ही अंतर दिखाई देता है। किसान माटी के समृद्ध होते हैं। भूमंडलीकरण के दौर में कृषि पर आधुनिक तकनीकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के माध्यम से जो इस देश में आती हैं उसे कृषि का प्रचार-प्रसार तंत्र उन किसानों तक पहुँचाने में लाचार नजर आता है, यह गंभीर और विचारणीय विषय है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है और कृषकों की मुख्य आय का साधन खेती है। किसानों की खुशहाली की बात सभी करते हैं और उनके लिए योजनाएं भी बनाते हैं किंतु उनकी मूलभूत समस्या ज्यों-की-त्यों बनी रहती है।

इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि ग्रामीण जन-जीवन और किसानों की समस्या पर आजकल हमारे साहित्यकारों और पत्रकारों का कम ही ध्यान जाता है। बड़ी तेजी से हो रहे शहरीकरण के बावजूद आज किसानों की दशा दयनीय है और खेती-बाड़ी एवं पशुपालन ही उनकी रोज़ी-रोटी का मुख्य जरिया है। सम्पूर्ण विश्व में वातावरण, मौसम, जमीन, अनाज, खेती-बाड़ी के तौर-तरीके आदि में इतनी विविधता (जो हमारी कृषि संस्कृति का निर्माण करते हैं) है कि यदि हम कृषि को उद्योग तथा किसान को समृद्ध बनाना चाहें तो यह कोई कठिन कार्य नहीं है। लेकिन गलत सरकारी नीतियों के कारण विश्व में फिर से खाद्यान्न संकट और महंगाई पैदा हो रही है। इसका मूल कारण यह है कि सम्पूर्ण विश्व में विकास और बढ़ोतरी के अंतर को ठीक से समझा नहीं जा रहा है।